नशा नाश का द्वार है

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

वृत्ति, प्रवृत्ति और प्रकृति तीन महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं। किसी क्रिया को एक बार करना वृत्ति है, बार–बार उसी को करना प्रवृत्ति कहलाता है। लम्बे समय तक प्रवृत्ति करने से वह प्रकृति बन जाती है। प्रवृत्ति अच्छी भी हो सकती है और बुरी भी। बुरी प्रवृत्ति समाज के लिए हानिकारक है। नशा की प्रवृत्ति एक बुरी प्रवृत्ति है। इसीलिए नशा को नाश का द्वार कहा गया है। नशा किसी भी चीज का हो बहुत बुरा होता है। नशे की आदत का परिणाम अंत में मृत्यु ही कारित कराता है। आज के युग मे नशा एक फैशन हो गया है। छोटे लड़कों से लेकर बुजुर्गों तक में यह आदत देखी जाती है। गुटखा, तम्बाकु, पान, बीड़ी, सिगरेट, शराब, गांजा यहां तक की नशे के लिए आजकल लोग इंजेक्शन भी लगाया करते हैं। नशा केवल एक आदत ही नहीं है, बल्कि एक फेशन है। केवल मनुष्यों में ही नहीं बल्कि पशुओं में भी यह आदत देखी जाती है। सर्प बीन की धुन सुनने का आदी होता है। अपने इस आदत के कारण वह सपेरे के द्वारा पकड़ लिया जाता है। मृग बंशी की ध्वनि सुनने का आदी होता है। अपने इस आदत के कारण वह शिकारी के द्वारा मार दिया जाता है। भ्रमर सुगंध का आदी होता है। अपने इस आदत के कारण कमल के कोश में बंद हो जाता है। एक बार कमल के कोश में बंद हुआ भ्रमर सोच रहा था कि रात्रि व्यतीत होगी, प्रातःकाल होगा, सूर्य उदित होगा और कमल खिलेगा। इतने में ही एक हाथी तालाब में आकर सम्पूर्ण कमलिनी के तंतुओं को रौंद डाला और कमल के कोश में बंद हुआ भ्रमर भी रौंद उठा। यह है नशे का परिणाम। इसलिये नशे को नाश का द्वार कहा जाता है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यदि हम देखें तो पता चलता है कि वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के साथ–साथ औद्योगिक विकास हुआ, तकनीकी का विकास हुआ। इस विकास के साथ मानसिक शान्ति का विकास नहीं हो सका। जितने सुविधा के साधन बढ़े हैं उसके

अनुपात से कहीं अधिक मानसिक तनाव और उससे उत्पन्न होने वाली समस्याएं बढ़ी हैं। समाज में व्यसन और अपराध बढ़े हैं। यदि व्यसन में कमी आ जाती है तो अपराध और गरीबी में बहुत कमी आ सकती है। विद्या ही समस्त विकास का आधार है। विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय विद्या प्रदान करने वाले महान् संस्थान हैं। जहां जीवन निर्माण होता है, वहां भी जीवन विनाश के बीच, व्यसन तेजी से अपना पैर जमा रहे हैं। आज अपेक्षा है शिक्षा जगत् से कि वह ऐसी शिक्षा, संस्कार तथा व्यवस्था दे, जिससे विद्यार्थी हर परिस्थिति में अपने व्यसन–मुक्त व्यक्तित्व को सुरक्षित रख सकें। स्वस्थ समाज का निर्माण तब तक नहीं हो सकता जब तक समाज व्यसन मुक्त नहीं हो जाता।

अनेक अपराध, हिंसा और कुकृत्यों का एक प्रमुख कारण है– नशा। अहिंसक समाज संरचना के लिए अपराध, हिंसा व आतंक में न्यूनता आये, यह सबसे बड़ी अपेक्षा है। इसका एक प्रमुख आधार है– व्यसन मुक्त समाज। शराब कितनी ही थोड़ी मात्रा में क्यों न पी जाए, वह मानसिक शान्ति को खराब कर देती है। वह दिमाग के स्नायु केन्द्रों को शून्य कर देती है जिससे बुद्धि की भले–बूरे की पहचान की क्षमता तथा सहनशक्ति जाती रहती है। व्यसन धीमा विष है, विष से भी भयंकर है। विष तो एक ही बार मारता है परन्तु व्यसन व्यक्ति को ही नुकसान नहीं पहुंचाता, वह परिवार, समाज व राष्ट्र के चरित्र को ठेस पहुंचाता है एवं तहस–नहस कर देता है।

पारिवारिक शान्ति, सामाजिक विकास और राष्ट्रीय चरित्र में उत्थान के लिए व्यसन मुक्त समाज की ओर ध्यान देना आवश्यक है। शराब शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आर्थिक दृष्टि से मनुष्य को बर्बाद कर देती है। शराब के नशे में मनुष्य दुराचारी बन जाता है एवं अफीम के नशे में वह सुस्त और मुर्दा बन जाता है। इस प्रकार व्यसन व्यक्तिगत स्तर पर शरीर, मन व भावों को प्रभावित करते हैं। सामुदायिक स्तर पर परिवार, समाज व राष्ट्र को भी प्रभावित करते हैं। आर्थिक स्तर पर भी इससे व्यक्ति को हानि ही होती है। व्यसन से ग्रस्त व्यक्तियों में अनेक बार भयानक घातक बीमारियां भी हो जाती हैं। जैसे तम्बाकू का सेवन करने वाले व्यक्तियों के दांत, जबड़े, गला, होंठ, जीभ आदि अंग बूरी तरह से विकृत हो जाते हैं। अनेक

व्यक्तियों की स्थिति ऐसी हो जाती है कि उनका चेहरा भी नहीं देख सकते। तम्बाकू चबाने से मुंह का कैंसर एवं गले का कैंसर भी हो सकता है। जब व्यक्ति मद्यपान का गुलाम हो जाता है तब यकृत, आमाशय, व गुर्दे पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वे खराब हो जाते हैं। शरीर दुर्बल हो जाता है। कार्यक्षमता घट जाती है। अनेक अकाल मृत्यु की गोद में चले जाते हैं। अफीम, गांजा, चरस, हेरोइन आदि का सेवन करने वाले व्यक्तियों की स्नायविक शक्ति दुर्बल हो जाती है। स्नायविक शक्ति को पुनः ठीक नहीं किया जा सकता। रोग–प्रतिरोधात्मक शक्ति भी क्षीण होती है और इससे व्यक्ति अकाल–मृत्यु से ग्रसित हो जाता है। युवा जो राष्ट्र के भावी कर्णधार है, उनमें नशे की बढ़ती प्रवृत्ति खेदजनक है। पहले तो नशा मनुष्य के अधीन रहता है पर बाद में मनुष्य स्वयं उसका गुलाम बन जाता है। अतः नशा को नाश का द्वार कहा जाना सही है।